मुहम्मद गोरी

मुहम्मद गोरी कौन था?

मुहम्मद गोरी के बारे में

- गोरीयों ने गजनी के जागीरदारों के रूप में शुरुआत की थी, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
- मुइज़ एद-दीन मुहम्मद, जिसे गोर के मुहम्मद के नाम से भी जाना जाता है, ईस्वी 1173 से 1202 तक गोरी साम्राज्य का सुल्तान था और ईस्वी 1202 से 1206 तक एकमात्र शासक था।
- उसे भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम शासन स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है, जो सदियों तक चला।

मुहम्मद गोरी फारसी मूल का था

- उसने आधुनिक अफगानिस्तान, बांग्लादेश, ईरान, उत्तरी भारत, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- गजनियों को गोरीयों से खतरा महसूस हुआ, इसलिये उन्होंने गोरी सम्राट अलाउद्दीन हुसैन शाह के भाई को पकड़ लिया और जहर दे दिया।
- इसके बाद अलाउद्दीन हुसैन शाह ने गजनवी शासक बहराम शाह को हराकर गजनी पर कब्जा कर लिया।
- गोरियों की शक्ति सुल्तान अलाउद्दीन के अधीन बढ़ गई, जिसने विश्व बर्नर (World Burner') (जहाँ-सोज़) की उपाधि अर्जित की क्योंकि बारहवीं शताब्दी के मध्य के दौरान उसने गजनी को तबाह कर दिया और उसे जला दिया।
- महमूद गजनी की मृत्यु के बाद गोरी गजनी की गद्दी पर बैठा।

गोरीयों का उदय:

- बारहवीं शताब्दी के मध्य में तुर्की आदिवासियों के एक समूह, जो आंशिक रूप से बौद्ध और आंशिक रूप से बुतपरस्त थे, ने सेल्जुक तुर्कों की शक्ति को चकनाचूर कर दिया।
- निर्वात में दो नई शक्तियाँ प्रमुखता से उभरीं, ईरान में स्थित ख्वारज़्मि साम्राज्य और उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान में गोर में स्थित गोरी साम्राज्य।
- ख्वारिज़्म साम्राज्य की बढ़ती ताकत ने गोरीयों की मध्य एशियाई महत्वाकांक्षा को गंभीर रूप से सीमित कर दिया।
- खुरासान, जो दोनों के बीच विवाद का कारण था, को जल्द ही ख्वारिज़्म शाह ने जीत लिया।
- इसने गोरीयों के लिये भारत की ओर विस्तार की तलाश करने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ा।
- गोमल दर्रे के रास्ते आगे बढ़ते हुए, मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद ने मुल्तान और उच को जीत लिया।
- 1178 ईस्वी में उसने राजपूताना रेगिस्तान में मार्च करके गुजरात में प्रवेश करने का प्रयास किया।
- 1190 ईस्वी तक मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद ने पेशावर, लाहौर और सियालकोट पर विजय प्राप्त कर ली थी और दिल्ली एवं गंगा के दोआब की ओर बढ़ने के लिये तैयार था।

मुहम्मद गोरी और अन्य भारतीय शासकों के बीच संघर्ष की पृष्ठभूमि:

- गुजरात के शासक ने माउंट आबू के पास एक युद्ध में मुहम्मद गोरी को पूरी तरह से हरा दिया, और मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद जीवित बचने में भाग्यशाली रहे।
- तब उन्हें भारत पर विजय प्राप्त करने से पहले पंजाब में एक उपयुक्त आधार बनाने की आवश्यकता महसूस हुई।
- चौहानों की शक्ति लगातार बढ़ रही थी। चौहान शासकों ने बड़ी संख्या में तुर्कों को हराया और मार डाला, जिन्होंने संभवतः पंजाब की ओर से राजस्थान पर आक्रमण करने की कोशिश की थी।
- उन्होंने सदी के मध्य के आसपास तोमरों से दिल्ली (ढिलिका कहा जाता है) पर भी कब्जा कर लिया था।

तराइन का युद्ध क्या है?

- **1191 ईस्वी में तराइन का प्रथम युद्ध:**
  - यह युद्ध दो महत्वाकांक्षी शासकों मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद और पृथ्वीराज के बीच युद्ध अपरिहार्य था।

- तबरहिन्दा पर प्रतिद्वंद्वी दावों के साथ संघर्ष शुरू हुआ।
- 1191 ईस्वी में तराइन में लड़ी गई लड़ाई में गोरी सेना को पूरी तरह से भगा दिया गया, मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद की जान एक युवा खलिजी घुड़सवार ने बचाई।
- पृथ्वीराज ने अब तबरहिन्दा को आगे बढ़ाया और बारह महीने की घेराबंदी के बाद इसे जीत लिया।
- पृथ्वीराज द्वारा गोरीयों को पंजाब से बाहर निकालने का बहुत कम प्रयास किया गया था।
- इसने मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद को अपनी सेना को फिर से संगठित करने और अगले वर्ष भारत के लिये एक और कोशिश करने के लिये समय दिया।
- उन्होंने पृथ्वीराज द्वारा गोरी शासक के कब्जे वाले पंजाब को छोड़ने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

- **1192 ईस्वी में तराइन का द्वितीय युद्ध:**

  - 1192 ईस्वी में तराइन की दूसरी लड़ाई को भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है।
  - मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद ने इसके लिये सावधानीपूर्वक तैयारी की थी।
  - ऐसा कहा जाता है कि उसने 1,20,000 पुरुषों के साथ मार्च किया, जिसमें भारी घुड़सवार सेना शामिल थी, जो पूरी तरह से स्टील के कोट और कवच और 10,000 घुड़सवार धनुर्धारियों से सुसज्जित थी।
  - जैसे ही पृथ्वीराज को गोरी से खतरे महसूस हुआ, उसने उत्तरी भारत के सभी राजाओं से मदद की अपील की।
  - पृथ्वीराज ने घुड़सवार सेना और 300 हाथियों के एक बड़े दल सहित 3,00,000 की सेना को मैदान में उतारा।
  - भारतीय सेनाओं की संख्याबल शायद अधिक थी, लेकिन तुर्की सेना बेहतर ढंग से संगठित और नेतृत्व वाली थी।
  - लड़ाई मुख्य रूप से घुड़सवार सेना के बीच की लड़ाई थी।
  - बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों ने अपनी जान गंवाई।
  - पृथ्वीराज बच निकला लेकिन सरस्वती (सिरसा) के पास पकड़ लिया गया।
  - तुर्की सेनाओं ने हांसी, सरस्वती और समाना के दुर्गों पर अधिकार कर लिया। फिर उन्होंने आक्रमण कर अजमेर पर अधिकार कर लिया।
  - पृथ्वीराज को कुछ समय के लिये अजमेर पर शासन करने दिया गया। इसके तुरंत बाद, पृथ्वीराज को 'षड्यंत्र' के आरोप में मार दिया गया और पृथ्वीराज के बेटे ने उसका उत्तराधिकारी बना लिया।
  - दिल्ली को भी उसके तोमर शासक को बहाल कर दिया गया था लेकिन इस नीति को जल्द ही उलट दिया गया था।
  - दिल्ली के शासक को बाहर कर दिया गया और दिल्ली को गंगा घाटी में आगे तुर्की की प्रगति के लिये एक आधार बनाया गया।
  - एक विद्रोह के बाद, एक मुस्लिम सेना ने अजमेर पर कब्जा कर लिया और वहां एक तुर्की जनरल को स्थापित किया।
  - पृथ्वीराज के पुत्र रणथंभौर चले गए और वहाँ एक नए शक्तिशाली चौहान राज्य की स्थापना की।
  - इस प्रकार, दिल्ली क्षेत्र और पूर्वी राजस्थान तुर्की शासन के अधीन हो गया।

- **बिहार और बंगाल की विजय:**

  - ईस्वी 1192 और 1206 के बीच गंगा-यमुना दोआब और बिहार और बंगाल सहित आसपास के क्षेत्र में तुर्की के प्रभुत्व का विस्तार हुआ।
  - दोआब में खुद को स्थापित करने के लिये तुर्कों को सबसे पहले कन्नौज के शक्तिशाली गढ़वाल साम्राज्य को हराना था।
  - गढ़वाल शासक जयचंद्र दो दशकों से शांतिपूर्वक राज्य पर शासन कर रहे थे।
  - तराइन के बाद मुइज़्ज़ुद्दीन अपने एक भरोसेमंद गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथों में भारत के मामलों को छोड़कर गजनी लौट आया।
  - अगले दो वर्षों के दौरान तुर्कों ने गढ़वालों के किसी भी विरोध के बिना ऊपरी दोआब के हिस्सों पर कब्जा कर लिया।

- **चंदावर का युद्ध :**

  - 1194 ईस्वी में मुइज़्ज़ुद्दीन भारत लौट आया। वह 50,000 घुड़सवारों के साथ जमुना पार कर कन्नौज की ओर बढ़ा।
  - कन्नौज के पास चंदावर में मुइज़्ज़ुद्दीन और जयचंद्र के बीच एक युद्ध लडा गया था।
  - जयचंद्र लगभग उस दिन जीत गया था जब वह एक तीर से मारा गया था, और उसकी सेना पूरी तरह से हार गई थी।

- **बनारस के लिये अभियान:**

  - मुइज़्ज़ुद्दीन अब बनारस चला गया जो तबाह हो गया था, वहाँ बड़ी संख्या में मंदिर नष्ट हो गए थे।
  - तुर्कों ने बिहार की सीमाओं तक फैले एक विशाल भू-भाग पर अपना आधिपत्य जमा लिया।
  - इस प्रकार तराइन और चंदावर की लड़ाइयों ने उत्तर भारत में तुर्की शासन की नींव रखी।
  - मुइज़्ज़ुद्दीन 1206 तक जीवित रहा। इस अवधि के दौरान उसने बयाना और ग्वालियर के शक्तिशाली किलों पर कब्जा कर लिया ताकि दिल्ली के दक्षिणी हिस्से की रक्षा की जा सके।

- **ऐबक का अभियान:**

  - कुछ समय बाद ऐबक ने क्षेत्र के चंदेल शासकों से कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर विजय प्राप्त की।
  - दोआब में एक आधार के साथ तुर्कों ने पड़ोसी क्षेत्रों में छापे मारने की एक श्रृंखला शुरू की। ऐबक ने गुजरात के शासक भीम तृतीय को हराया और अन्हिलवाड़ा और कई अन्य शहरों को तबाह और लूट लिया गया।
  - हालांकि एक मुस्लिम गवर्नर को उस स्थान पर शासन करने के लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन उसे जल्द ही हटा दिया गया था।
  - इससे पता चलता है कि तुर्क इतने दूर-दराज के क्षेत्रों पर शासन करने में सक्षम नहीं थे। हालाँकि तुर्क पूर्व में अधिक सफल थे।

- **बख्तियार खलिजी का अभियान (1205 ई.):**

  - बख्तियार खलिजी, जिसके चाचा तराइन की लड़ाई में लड़े थे, को बनारस के बाहर कुछ क्षेत्रों का प्रभारी नियुक्त किया गया था।
  - उसने इसका फायदा उठाते हुए बिहार में लगातार छापे मारे, जो उस समय नो मैन्स लैंड की प्रकृति का था।
  - इन छापों के दौरान उसने बिहार के कुछ प्रसिद्ध बौद्ध मठों, नालंदा और विक्रमशिला पर हमला किया और नष्ट कर दिया, जिनका कोई

रक्षक नहीं बचा था।
    - उसने बहुत संपत्तिभी जमा कर ली थी और अपने आसपास कई अनुयायियों को इकट्ठा कर लिया था। अपने छापे के दौरान, उसने बंगाल के मार्गों के बारे में भी जानकारी एकत्र की।
    - बंगाल एक समृद्ध क्षेत्र था क्योंकि इसके आंतरिक संसाधनों और फलते-फूलते विदेशी व्यापार ने इसे शानदार रूप से समृद्ध होने की प्रतिष्ठा दी थी।
    - सावधानीपूर्वक तैयारी करते हुए बख्तियार खलजी ने नादिया की ओर एक सेना के साथ मार्च किया, एक तीर्थस्थल जहाँ सेन शासक, लक्ष्मण सेन ने एक महल बनाया था व जहाँ वह तीर्थ यात्रा पर गया था।
    - तुर्की घोड़ों के व्यापारी उन दिनों एक आम दृश्य बन गए थे।
    - बख्तियार खलिजी ने घोड़ा-व्यापारी होने का ढोंग करते हुए महल पर अचानक हमला कर दिया और एक बड़ी गड़बड़ी पैदा कर दी।
    - बख्तियार ने तब मार्च किया और बिना किसी विरोध के सेना की राजधानी लखनौती पर कब्जा कर लिया।
    - लक्ष्मण सेन की सेना दक्षिण बंगाल के सोनारगाँव में चली गई जहाँ उन्होंने और उनके उत्तराधिकारियों ने शासन करना जारी रखा।
    - बख्तियार खलिजी को औपचारिक रूप से मुइज़्ज़ुद्दीन द्वारा बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया गया था।
    - उन्होंने वस्तुतः स्वतंत्र शासक के रूप में इस पर शासन किया। लेकिन वह इस पद पर अधिक समय तक नहीं रह पाया।

मुहम्मद गोरी की मृत्यु कैसे हुई?

- उसने मूर्खतापूर्ण ढंग से असम में ब्रह्मपुत्र घाटी में एक अभियान चलाया।
- असम के माघ शासक पीछे हट गए और तुर्की सेनाओं को जहाँ तक हो सके आने दिया।
- अंत में थकी हुई सेनाओं ने महसूस किया कि वे और आगे नहीं जा सकते और उन्होंने रुक जाने का फैसला किया।
- उन्हें रास्ते में कोई राशन नहीं मिला और असमिया सेनाओं द्वारा उन्हें लगातार परेशान किया गया।
- भूख और बीमारी से थकी और कमज़ोर तुर्की सेना को एक ऐसी लड़ाई का सामना करना पड़ा जिसमें आगे एक चौड़ी नदी थी और पीछे असमिया सेना थी।
- तुर्की सेनाओं को पूरी तरह हार का सामना करना पड़ा।
- बख्तियार खलिजी कुछ पहाड़ी कबीलों की मदद से कुछ अनुचरों के साथ वापस आने में सफल रहा। लेकिन उनका स्वास्थ्य और हौसला टूट गया था।
- गोरी गंभीर रूप से बीमार था और अपने बिस्तर तक ही सीमित था जब उसे अपने ही अमीरों में से एक ने मार डाला था।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/muhammad-ghori